International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 174-176

रामदरश मिश्र का गीति – काव्य

डॉ. संतोष कौल काक
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत।

प्रस्तावना

सूरदास, तुलसी, मीरा,महादेवी, निराला, बच्चन, शिवमंगल सिंह सुमन आदि की रचनाओं से समृद्ध होती गीत - परंपरा में रामदरश मिश्र एक ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने उपन्यास, कहानी, संस्मरण, आत्मकथा, आलोचना और काव्य इन विधाओं में अपनी रचना धर्मिता से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

पथ के गीत (१९५१), बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ (१९५२), पक गयी है धूप (१९५९), कंधे पर सूरज (१९७७), दिन एक नदी बन गया (१९८४), मेरे प्रिय गीत (१९८५), जुलूस कहाँ जा रहा है (१९८९), आग कुछ नहीं बोलती (१९९२), बारिश में भीगते बच्चे (१९९६), ऐसे में जब कभी (१९९९) उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं।

'पथ के गीत' संग्रह के अपने प्रारंभिक गीतों में ही उन्होंने अपने निजी अनुभवों, संवेदनाओं को अपने समय और परिवेश में मौजूद संघर्ष - शोषण, विसंगतियों - चुनौतियों, आशा – आकांक्षाओं, प्रकृति और प्रेम को चित्रित किया है।

'बेरंग बेनाम चिट्ठियाँ' संग्रह की कविताओं में, गीतों में उन्होंने यथार्थ से हुए साक्षात्कार को, अपने जीवनानुभवों को पूरी प्रासंगिकता से उजागर किया है। यहाँ पहुँचकर व्यष्टि का स्वर समष्टि में समाहित हो गया है।

'पक गयी है धूप' संग्रह के तीन भागों में से दूसरे भाग में गीत हैं। इन गीतों के सम्बन्ध में मिश्रजी स्वयं कहते हैं - " ये गीत या छोटी-छोटी कविताएँ मूर्त वस्तु - जगत से उत्पन्न मन की लौ या वस्तु - जगत और मन के बीच के एक मधुर तनाव को व्यक्त करने का प्रयास करती हैं। "। १

'कंधे पर सूरज' संग्रह सामाजिक दायित्व का सूरज है जो मूल्य - चेतना का प्रतीक भी है। इसमें सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं, जन - सामान्य के शोषण का वर्णन है। इस संग्रह के गीतों की विषय - वस्तु व शैली कविताओं सी ही है, परन्तु इन गीतों में एक सधाव भी है।

'दिन एक नदी बन गया' और 'आग कुछ नही बोलती' में नगरीय जीवन की यांत्रिकता, उसकी कृत्रिमता में कैद होते जीवन, औद्योगीकरण से मिटते ग्राम - सौन्दर्य व पर्यावरण के प्रति कवि की बैचेनी, संवेदनशीलता उभर आई है।

'जुलूस कहाँ जा रहा है'में मानवीय नियति के प्रति लेखक की चिंता बड़ी संवेदनशीलता से उभरी है। इसके गीत लयात्मक हैं।

'मेरे प्रिय गीत, सभी काव्य - संग्रहों से चुने गीतों का संकलन है। इन गीतों के रचना काल में लम्बा अन्तराल होने के कारण संवेदना और वैचारिकता में अंतर है। अतः कवि ने स्वयं उन्हें तीन कोटियों में बाँटा है। उनके किशोरावस्था में लिखे गए गीतों में वैचारिकता की अपेक्षा भावुकता का प्राधान्य है। भारतीय लोगों क प्रति गहरे प्रेम और नित नये अनुभवों से आयी प्रौढता के कारण भावुकता के साथ-साथ लोकोन्मुखता का भाव उनमें जुड़ता गया और यह लोकोन्मुखता उत्तरोत्तर प्रौढ़ एवं विकसित होती चली गयी।

७० के बाद वे कथा - साहित्य की ओर मुड़े और उनके गीत - लेखन की गति मंद पड़ गयी। इसे उन्होंने स्वय अपने संग्रह 'मेरे प्रिय गीत' की भूमिका में स्वीकारा है। अतः उनके बाद के संग्रहों जैसे कि 'बारिश से भीगते बच्चे', 'ऐसे में जब कभी' आदि में गीतों का अभाब है। हाँ, प्रकृति और लोकजीवन के प्रति संवेदनशीलता, इन संग्रहों में गहराई से उभरी है।

गीतों में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति सहज स्वाभाविक रूप में होती है। आधुनिक विचारकों का मत है कि "भावावेग के कारण कवि उमड़ पड़ता है और उस समय उसके हृदय से जो धारा निकलती है, वही गीत है।" २. महादेवी वर्मा का इस सम्बन्ध में कथन है - "साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख - दुखात्मक अनुभूति का वह शब्दरूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।" ३. इसी सन्दर्भ में शंभुनाथ सिंह का मत है - "आत्मसात अनुभूतियों की संगीतात्मक अभिव्यक्ति ही गीत - काव्य है, प्रगीत और मुक्तक, गीत, गाथा - गीत आदि उसके विविधरूप हैं।" ४

वर्णिक छंदों में लिखे गए प्राचीन महाकाव्यों में भी लय और संगीत तरंगित होते थे। प्रारंभिक गीतों में लयबद्धता और संगीतात्मकता होती थी। धीरे - धीरे गीतों के स्थान पर मुक्तक के रूप में गीत लिखे जाने लगे। इन मुक्तकों में, छोटे - छोटे गीतों में बड़े विचार पेश करने की कोशिश गीतकारों ने की। इन मुक्तक गीतों को, नवगीत के नाम से भी जाने लगा। गीत लिखते हुए कवि अनियमित लय में रचना करते हुए भी एक गमक और प्रवाह पैदा करते हैं, जिससे पाठक, श्रोता रस व आनंद प्राप्त करते हैं। इनमें छंद से संबंधित किसी विशेष नियम को पालने का आग्रह तो नहीं होता, किन्तु लयात्मकता और गेयता के लिये मात्राओं के संतुलन पर ध्यान देना होता है। कुछेक गीतकार एक मुखड़ा और दो तीन अंतरों के रूप में गीत रचते हैं। संक्षेप में कहें तो गीत और नवगीत में काल का, कथ्य का और भाषा का अंतर है। जहाँ गीत की आत्मा व्यक्तिकेंद्रित होती है वहीं नवगीत की आत्मा समग्रता में निहित होती है।

छंद की दृष्टि से देखें तो नवगीतों में वर्णिक छंद चाहे न हों, मात्रा का वहाँ ध्यान रखा जाता है। डॉ रामदरश मिश्र जी ने यूँ तो परंपरागत छंदों को अपनाया नहीं था। हालाँकि कुछेक जगह आरम्भ में उन्होंने हरिगीतिका का प्रयोग किया है, परन्तु आधुनिक कवियों द्वारा प्रयुक्त ऐसे छंदों को जरुर अपनाया जिसमें लयात्मकता हो। विशेषकर मात्रिक छंद को। जैसे 'कौन' और 'चल रहा हूँ मैं' इन गीतों में हर चरण में २८ मात्राएँ हैं। इस गीत में लेखक के जीवन - संघर्ष, जन - जीवन के संघर्षों व पीड़ा में समाहित हुए प्रतीत होते हैं।

चल रहा हूँ क्योंकि गति से पथ का निर्माण होगा।
\+ \+ \+
आँधियों में भी दिवा का दीप जलना जिंदगी है
पत्थरों को तोड़ निर्झर का निकलना ज़िन्दगी है।
चाहता हूँ मैं किसी छाया तले नि:श्वास ले लूँ
किंतु कोई कह रहा दिन रात चलना जिंदगी है। ५

वहीँ 'गीत' रचना में २० मात्राएँ हैं।

मेरे अमर गान ...जिसके चरण साध वसुधा रही डोल
युग की जटिल ग्रंथि मानव रहा खोल।
जिसमें नयन डाल पढता पवन प्यार
जिसके तरल राग गति के अभय दान। मेरे अमर गान। ६।

वे सामान्यतः अपने गीतों में चार चरणों की इकाईयों का, कभी - कभार इन इकाईयों के बीच - बीच में एक या दो इकाईयों को जोड़ कर उसका प्रयोग करते हैं। उन्होंने

केवल दो चरणों की इकाईयों को भी गीत रूप में लिखा है। ३ मात्राओं का यह गीत 'खंडहर' से है।

हे युग - युग के मौन देवता, हे अतीत के शांत ललाट
हे सदियों के मौन तपस्वी,वैभव के बूढे सम्राट ! ७।

'मीनार' गीत भी इसी तरह का उदाहरण है। तो इसी संग्रह का 'शारदीया राका' सात चरणों का ३२ मात्राओं वाला गीत है।

गीत्तात्मकता |गेयता|

गेयता गीतों का महत्वपूर्ण लक्षण है। लोक गीतों में पायी जानेवाली लय व संगीतात्मकता उन्हें मधुर व कर्णप्रिय बनाती है। मिश्रजी लिरिकल कवि हैं. उन्होंने अपने गीतों के विषय में कहा है, '' मैंने ग्राम - गीतों के ढ़ंग पर कुछ गीत लिखे हैं। इन गीतों मे कहीं तो ग्राम - गीतों की केवल लय है और कहीं लय और प्रवाह दोनों'' ८। उनके गीतों की इसी विशेषता को लक्षित करते हुए कहा गया है कि, '' लोकगीतों के स्पर्श से युक्त एक अनोखी मार्मिकता मिश्रजी के गीतों मे देखने को मिलती है जो पाठक को बरबस आकर्षित करती है. लोक जीवन मे प्रचलित भाषा का सहज स्वाभाविक प्रयोग देखते ही बनता है'' ९।
लोकगीत शैली मे लिखे गये उनके गीत 'फागुन' की गेयता का सुन्दर उदाहरण है -

निर्दल सेमल - डाल, सुमन - दल लाल भरे
चोंच विरस काग भारे फुदक फिर डाल धरे
झरर झरर, रज - रंग अंखड़ियाँ पंखड़ियाँ भरीं।
फड़ फड़ गेहूँ के गात कनक - कर बाल भरे
खेत खड़ी विधु बाल बटोही निहारे हे !
दर्द जगावे कोइलिया, तहाँ भिनसारे हे ! १०।

अपनी भावनाओं, संवेदनाओं के हर रंग को उन्होंने कर्णप्रिय, लयात्मक गीतों में चित्रित किया है।

'पथ के गीत' का एक और उदाहरण देखिये-
जीवन कभी न हारा ....
लघु साँसों को संबल मेरा, पथ पर घिरता हुआ अंधेरा
बाधाओं की घनी घटा में, कितने अवसादों का डेरा
रही चमकती आशाओं सी क्षण क्षण विद्युत् की नव रेखा
लड़ता रहा युगों तक पथ से किन्तु न कभी पुकारा ..... ११।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त एवं महत्वपूर्ण माध्यम है। उसके मुख्यतः दो अंश होते हैं। शब्द और अर्थ। इन दोनों की सहायता से ही रचनाकार अपनी भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करता है। प्रत्येक रचनाकार अपने भावों के अनुरूप भाषा को अपनाता है। अभिव्यक्ति की अपार शक्ति से सम्पन्न रामदरश मिश्रजी ने अपनी रचनाओं में, गीतों में, भावानुरूप भाषा का प्रयोग किया है और उसीके अनुरूप शब्दों, मुहावरों आदि का प्रयोग भी किया है। उनकी भाषा मे शून्य, तरु, दिगंत, गोधूलि, सुधा - वृष्टि आदि संस्कृत तथा, पपीहरी, भिनसारे, बादरा, महलिया, महमहाती, जैसे आंचलिक - देशज शब्दों के साथ - साथ अंग्रेजी, अरबी - फारसी आदि शब्दों का प्रयोग भी दिखाई देता है। उनकी रचनाओं मे कोमल व आत्मीय भावों हेतु कोमलकांत शब्दों का तो अमानवीयता, अत्याचार, शोषण, विद्रूपता हेतु तीक्ष्ण, कठोर शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों का भी यथावसर प्रयोग सुंदर है –

फूट फूट उमड़ रागों की घाटियाँ / बह उठी पिकी स्वर में बागों की घाटियाँ
उडी जा रहा है नभ में लहर-लहर मेघ की /डूब उठी छाँह में तड़ागों की घाटियाँ
हरियाली आँखों मे भर लेना चाहती / भग जाते ऊपर शरमाए घन बादरा | १२.

ध्वन्यात्मकता उनकी भाषा की वह महत्वपूर्ण विशेषता है, जिसने उनके गीतों के सौन्दर्य मे अभिवृद्धि की है। 'फागुन आया' आदि गीतों की द्वान्यत्मकता भी प्रभावशाली है। व्यंग्यात्मकता भी उनकी भाषा में प्रखरता से उभरी है। मानवता के गिरते स्वर, बलि – प्रथा, प्रेम की आत्मीयता के स्थान पर हावी होते शारीरिक आकर्षण पर उन्होंने करारा व्यंग किया है-

फूल प्राणों का चढाते स्वप्न की 'शव साधना' में
बलि चढाते मनुज की पाषाण की आराधना में,
लूटते हो आबरू की आब चांदी के करों से,
प्यास को बंदी बनाया नग्न भूखी वासना में. १३।

भावों और विचारों के मूर्तीकरण हेतु रचनाकार सटीक बिंबो की सृष्टि करता है। डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार, '' बिंब रचना काव्य का मुख्य व्यापार है। बिम्बों के द्वारा ही कवि वस्तु, घटना, व्यापार, गुण, विशेषता, विचार, आदि साकार तथा निराकार यथार्थों और मानस - क्रियाओं को प्रत्यक्ष एवं इंद्रिय ग्राह्य बनता हैं।'' १४
रामदरश मिश्र ने अनेक बिंबो का सृजन भी किया है। संसार में बिखरी छवियों को अपनी कल्पना के सहयोग एवं स्मृति के रंगों में रंगते हुए अप्रस्तुतों व प्रतीकों की सहायता से उन्होंने मूर्त बिंबों की सृष्टि की है। 'हरसिंगार की डाली' के शब्द बिंब का भाव देखिये –

हरसिंगार की डाली तूने झकझोर दी / फूल जो कि रात भर झरे
वे भी तेरे थे / डाली पर जो रहे भरे / वे भी तेरे थे
प्रीत की प्रतीत हाय क्यों तूने तोड़ दी | १५।

उन्होंने वर्णों की विशिष्ट योजना से अर्थगर्भित वर्ण - बिंबो की रचना भी की है। अंचल व ग्राम्य प्रकृति के प्रति विशेष लगाव के कारण उनके गीतों में दृश्य - बिंबो की भरमार है। विशेषकर प्रकृति व प्रणय से संलग्न गीतों में -

पल-पल टूट गिरे दिन के डालों से / ढेर हुए सूखे पत्ते सालों से
डाल - डाल पर बिछी नज़र है मेरी / नए पात आने में कितनी देरी है | १६.

श्रव्य - बिंब का बहुत सुंदर गीत है 'फागुन आया' गीत –

सौ-सौ उजड़े बन – बागों की आहों का झोंका झहराया
'हर-हर झर-झर' में गूँज उठा फागुन आया फागुन आया'
हुहुकार रहा मदमत्त पवन / बजते मरुकन, तरु तन झन-झन
भरते झर-झर्म जर्जर – द्रुम - दल / धुओं की ये सोसे हन - हन | १७।

दृश्य -श्रव्य बिंब का सुन्दर समन्वय गीत 'एक नीम मंजरी' में हुआ है –

एक नीम मंजरी /मेरे आँगन झरी / काँप रहे लोह के द्वार
आज गगन मेरे घर झुक गया / भटका - सा मेघ यहाँ रूक गया |
रग-रग में थरथरी / सन्नाटा आज रो रहा / मुझे नाम ले पुकार | १८।

इनके गीतों में स्पर्श एवं गंध बिंब के गीतों की संख्या है पर कम | 'प्रणय स्पर्श' का सुंदर उदाहरण है 'तुम बिन' गीत -

मेरे कपड़ो में गरम-गरम / ज्यों दो हथेलियाँ डोल रहीं |
कुर्सी के पीछे खड़ी-खड़ी / वैसे कि चुप्पियाँ बोल रहीं | १९।

प्रतीकों का प्रयोग हिदी साहित्य में प्रत्येक युग में हुआ है। प्रतीक का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। रचनाकार अपनी प्रतिभा से अपने अंतर्जगत की अनुभूतियों की अभिव्यक्त संकेतों के माध्यम से करता हैं। डॉ गोविन्द रजनीश ने कहा है, "प्रतीक भावों की गहनतम अभिव्यक्ति के साधन हैं, जिनके माध्यम से अमूर्त, अदृश्य, अप्रस्तुत, अश्रव्य विषय का प्रतिविधान मूर्त दृश्य, श्रव्य द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। प्रतीक मानव परिवेष्टन में दृष्टगत वस्तु का मानव प्रतिमा के साथ तादात्म्य कर लेता है. कल्पना के पुट द्वारा उसका आदर्शमय स्वरुप प्रस्तुत कर कला का सृजन करता है।" २०

रामदरश मिश्र जी ने कुछ प्रतीकों का बार - बार प्रयोग किया है। जैसे बसंत, फागुन, धूप, जंगल, सड़क, जल, पतझर, गठरी आदि। 'बसंत आ रहा है' में बसंत प्रिय के आगमन का प्रतीक है तो 'ओ बसंत की हवा' में यौवन और उसके उल्लास का, 'बौरा – बौरा वसंत' में वह यौवन की कल्पनाओं और उसके मतवालेपन का, 'दूर ही दूर से बुलाता है' में वह भविष्य की संभावना और आशा का और वहीँ 'महानगर में बसंत' और 'बसंत का एक दिन' में वह महानगरों के नकली बसंत यानि दिखावटीपन का प्रतीक बनकर आया है। इस तरह उन्होंने एक ही शब्द को कई प्रतीकों के रूप में अलग -अलग रूप में चित्रित किया है। 'एक नीम मंजरी' गीत का उदाहरण हम आगे देख ही चुके हैं। जिसमें नीम की मंजरी प्रणय की प्रथम अनुभूति का प्रतीक है। उन्होंने प्राकृतिक उपादानो का मानवीकरण कर 'सबने जीवन का दान किया', 'शवसाधना' आदि गीतों में भी इसी तरह अपनी बात रखी है।

बार बार बाँसुरी बजाओ न पिया / लहरों के पार से बुलाओ न पिया
गाते हो तुम कि मेरा मन गमगमा रहा, /लगता जैसे कुछ प्राण में समा रहा,
सपनो से मन को गुहराओ न पिया। २१।

मिश्रजी मूलतः प्रकृति व लोकजीवन के चितेरे हैं। उनकी संवेदना मूलत: गाँव से जुडी हुई है। गीति उनका मूल तत्व है। उनकी मुक्तछंद कविताएँ भी कहीं-कहीं गद्य की जैसी सपाट होने के बावजूद सरलता व कथ्य के कारण प्रभावशाली हैं। समय के साथ किशोरावस्था की भावुकता की जगह प्रौढ़ होते कवि के गीतों में लोकोन्मुखता ने ले ली। उनके इन्हीं गीतों मे उन्हें प्रगतिशील कवियों की श्रेणी में पहुँचा दिया। स्वतंत्रता के पश्चात् मध्यवर्गीय जीवन में आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आई जटिलता के कारण इनके गीतों में विषाद व बौद्धिकता का स्वर मुखर हुआ। उनके गीतों में प्रकृति-सौंदर्य व प्रेम है इसलिए उनमें फागुनी रंगत है, लाज - बसन डुबोते यायावर बादल हैं, विदाभास देती बनराईयाँ हैं, झर- झर झरते हरसिंगार हैं, पके धान हैं, उनसे झरती धूप है, जलते हुए फूल हैं तो लहरों के पार बाँसुरी बजाकर बुलाती पिय की टेर भी है, जो जीवन की जटिलताओं के चित्रों के बावजूद गीतों में रोमांटिक भाव - बोध को जिन्दा रखने का प्रीतिकर एहसास कराती है। नवगीतों की कसौटी पर चाहे उनको कोई कम आँके पर इन गीतों में एक चित्ताकर्षक संवेदना है, तरल स्पंदन है, अन्तरंग को आलोकित करता निजी स्वर, भीतर से पुकारती बेचैन करती एक अनहद लय है जिसकी पुकार को अनसुना नहीं किया जा सकता।

उनके सभी गीतों में जो ख़ास रूप से उभरती दीखती है वह है उनकी संवेदनशीलता। एक ऐसे व्यक्ति की संवेदनशीलता जो महानगरों की यांत्रिकता, उससे उपजे तनाव, खिंचाव, अजनबीपन, दिखावटी ज़िन्दगी और उसके बीच सिसकती मानवीयता के कारण घुटन महसूस करता हैं, और इस घुटन से मुक्त होने के लिए वह अपने ग्रामीण संस्कारों, गँवई जीवन की स्मृतियों में लौटता है, वहाँ का स्वतंत्र वातावरण, विस्तृत नील आकाश, यायावर बादल, नदी – ताल – झील, पेड़ – पहाड़, गुलमुहर के फूल, सरसों या अन्य दूर – दूर तक बिछे सुन्दर लुभावने खेत, फागुन - वसंत और वहीँ की हवा - पानी और मिटटी की महक उनके अंतस को आलोकित कर देती है। और निर्भय – निर्द्वंद्व कवि पुनः – पुनः गुनगुना उठता है -

डगमग चरण; सिहरती धरती / काँटे चुभे नयन भर आए
पर राही ने कभी कहीं से, माँगा नहीं सहारा !
तूफानों से लड़ता – लड़ता जीवन कभी न हारा ! २२

सन्दर्भ सूची

1. पक गयी है धूप, रामदरश मिश्र, भूमिका।
2. आधुनिक काव्य शिल्प, डॉ.मोहन अवस्थी, पृ. सं. ११।
3. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, महादेवी वर्मा, पृ. सं. १०५।
4. छायावाद युग : डॉ शंभुनाथ सिंह; पृ. सं. १८४।
5. पथ के गीत, रामदरश मिश्र, चल रहा हूँ, पृ. सं.१
6. पथ के गीत, रामदरश मिश्र, पृ. सं. ५।
7. पथ के गीत (खंडहर), रामदरश मिश्र, पृ. सं. ७६-७७
8. पथ के गीत की 'अपनी बात' में, रामदरश मिश्र।
9. हिंदी नवगीत-संदर्भ और सार्थकता, संपा. वेदप्रकाश अमिताभ, रंजना शर्मा, पृ. सं. ९१।
10. पथ के गीत, रामदरश मिश्र, पृ. सं. ९६।
11. पथ के गीत, रामदरश मिश्र, पृ. सं.११।
12. kavitakosh.org. (रामदरश मिश्र : कविता कोश) ।
13. शवसाधना, रामदरश मिश्र, पृ. सं. ५९।
14. काव्यशास्त्र, डॉ भगीरथ मिश्र, ७ वाँ संस्करण, पृ. सं.२६३।
15. मेरे प्रिय गीत, रामदरश मिश्र, पृ. सं. ३८।
16. मेरे प्रिय गीत (बाट बुहारू), रामदरश मिश्र, पृ. सं. ४७।
17. मेरे प्रिय गीत, रामदरश मिश्र, पृ. सं.२३-२४।
18. मेरे प्रिय गीत, रामदरश मिश्र, पृ. सं. ४१।
19. बैराग बेनाम चिट्ठीयाँ, रामदरश मिश्र, पृ. सं. २४।
20. समसामयिक हिंदी कविता : विविध परिदृश्य, डॉ. गोविन्द रनजीश, पृ. सं. ७०।
21. kavitakosh.org, (रामदरश मिश्र : कविता कोश)।
22. पथ के गीत, रामदरश मिश्र, पृ. सं. ११।